जीवन में श्रेय और प्रेय

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव जीवन सभी जीव योनियों में सर्वश्रेष्ठ है। सत्कर्म करने के पश्चात् मानव जीवन प्राप्त होता है। जीवन की सार्थकता श्रेय में है प्रेय में नहीं। श्रेय को अर्थ है आध्यात्मिक जीवन जीना। प्रेय का अर्थ है प्रिय वस्तुओं में मन को लगाना। श्रेय आत्मा है और प्रेय भौतिक वस्तुएं। सन्मार्ग पर चलने वाले श्रेय के मार्ग का वरण करते हैं। भौतिक वस्तुओं से प्रेम करने का वाले प्रेय के मार्ग का वरण करता है। हंस मानसरोवर में रहता है और मोती चुमता है। वह पत्थर को छोड़ देता है। इसी तरह मानव जीवन में श्रेय और प्रेय दो मार्ग हैं। ज्ञानी व्यति श्रेय के मार्ग का वरण करता है। सामान्य व्यक्ति प्रेय के मार्ग का वरण करता है। भगवान महावीर ने कहा है कि उठते, बैठते, सोते, जागते ज्ञानी विवेक को ही धारण किये रहता है। हर कर्य में सावधानी बरतनी चाहिए। हिंसा के मार्ग को नहीं चुनना चाहिए। एकेन्द्रिय जीवों से लेकर पंचेन्द्रिय प्राणियों के लिए श्रेय का मार्ग है। हिंसा से अहिंसा श्रेयष्कर है। संवर में प्रकृति होनी चाहिए। महावृत्ति बनने के बाद कर्मों का आगमन बन्द हो जाता हैं।

मानव के जीवन का उद्देंश्य सादा जीवन उच्च विचार है। सादा जीवन का अर्थ है जीवन में सादगीपूर्ण व्यवहार करना। विचार और व्यवहार में समानता होनी चाहिए। सभी प्राणियों को अपने समान मानना चाहिए। जो व्यक्ति अपने समान समस्त प्राणियों को देखता है वह समदर्शी होता है। उपनिषद् की एक कथा के अनुसार महर्षि याज्ञवल्क्य मैत्रीय और कात्यायनी दो पत्नियां थीं। उन दोनों को महर्षि याज्ञावल्क्य ने अपनी सम्पत्ति का बंटवारा करना चाहा। जब दोनों के सामने प्रस्ताव रखा तो एक ने महर्षि के भौतिक सम्पत्ति को प्राप्त करने की इच्छा की। वह प्रेयकामी थी। किन्तु जो दूसरी श्रेयकामी थी उसने कहा भगवन हम उस सम्पत्ति को लेकर क्या करेंगे जो आज है कल नहीं रहेगी। हमें तो ऐसी सम्पत्ति दीजिए जिससे आत्मकल्याण हो। जो श्रेयकामी होता है वह आत्मा में रमण करता है। आत्म रमण करना आत्माराम होना है।

श्रेय का मार्ग मोक्ष का मार्ग है। यह आत्मज्ञान का मार्ग है। इससे प्रज्ञा का जागरण होता है। श्रेयपथ का अनुयायी न किसी को दुख देता है और न किसी से राग–द्वेष करता है। श्रेय का मार्ग आत्मज्ञान का मार्ग है और प्रेय का मार्ग लौकिक जगत का मार्ग हैं जो जैसा बीज बोता है वह वैसा फल भी प्राप्त करता है। आम का बीज बोने वाला आम का फल प्राप्त करता है और बबूल का बीज बोने वाला बबूल को प्राप्त करता है। श्रेय मार्ग का अनुयायी समदर्शी होता है। सभी वस्तुओं में जीव का दर्शन करता है। प्रेयकामी धन–दौलत और भौतिक वस्तुओं को सब कुछ मानता है। उसकी दृष्टि में संसार ही सब कुछ है। ऐसा व्यक्ति संसार के जाल में फसता जाता है। वह संसार सागर में ही डूबा रहता है। उसकी दृष्टि भौतिकतावादी ही रहती है। श्रेयकामी व्यक्ति भौतिक वस्तुओं को नश्वर मानता है। भौतिक वस्तुएं क्षण–क्षण नष्ट हो रही हैं। शरीर भी पंचभूतात्मक है। जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्रों को धारण करता है वैसे ही आत्मा भी पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करती है। आत्मा अभौतिक है, शरीर भौतिक है। आत्मा के निकल जाने के बाद शरीर के तत्व पंचभूतों में मिल जाते हैं।

इस संसार में सभी स्वार्थ के कारण ही एक–दूसरे से प्रेम करते हैं। जब तक स्वार्थ रहता है तब तक एक–दूसरे से सम्बन्ध बनाये रखते हैं। जब स्वार्थ सिद्ध हो जाता है तो कोई किसी को नहीं पूछता। जो आत्मा से प्रेम करता है वही सच्चा भक्त है। इस संसार में सम्बन्धों का जाल शरीर तक ही सीमित है। शरीर में अनेक प्रकार के भौतिक पदार्थों का लेपन करके सुन्दर दिखने का सभी प्रयास करते हैं। किन्तु सभी भौतिक पदार्थ ढाक के पते की तरह धीरे–धीरे नष्ट हो जाते हैं। जो व्यक्ति आत्मा से प्रेम करता है वह सच्चा प्रेमी है। इसलिए मानव को श्रेय के मार्ग का ही वरण करना चाहिए।

अध्यात्म का अर्थ है आत्मा में रहना। जीव और जगत् के भेद को जानना और मानना। संसार को ही सबकुछ मानकर न रहना। पारलौकिकता के बारे में चिंतन करना। इस संसार में मानव लौकिक और पारलौकिक जगत के विषय में चिंतन करता है। लौकिक से तात्पर्य इस लोक से है जिसमें हम रहते है। सभी प्राणी इस लोक में ही अपनी जीवन लीला करते है। एक इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय प्राणी तक सभी जीव हैं। चेतना का स्तर सब में भिन्न–भिन्न है। मनुष्य ही

एक ऐसा प्राणी है जो लौकिक और पारलौकिक जगत के विषय में सोचता है। धर्म कर्म करता है। अन्य प्राणी केवल इन्द्रिय के वशीभूत होकर के ही कार्य करते हैं। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें बुद्धितत्व है और वह विवेक से कार्य करता है। बुद्धि ही मानव को अन्य प्राणियों से भिन्न करती है। आत्मा तो सब में है। सभी आत्माएं समान है। मानव ही आत्मचिंतन करता है। जितने भी दर्शन है सभी ने आत्मा के बारे में चिंतन किया है और सत्य का साक्षात्कार करने का प्रयास किया है। आत्मा के स्वरूप के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। योगी लोग आत्मा के स्वरूप का साक्षात्कार करते है। भोगी लोग इस संसार को ही सबकुछ मानकर उसी में भ्रमण करते है। आत्मा सच्चिदानंद स्वरूप है। यही श्रेय का मार्ग है।